एलोवेरा: किसान के लिए एक अद्भुत फसल

निलेश शर्मा
पी.एच.डी., आर. वि. एस. के. विश्वविद्यालय, ग्वालियर
Email Id: nileshsharma233@gmail.com

फसल परिचय :

एलोवेरा एक मूल्यवान और महत्वपूर्ण औषधीय पौधा है। यह एक बारहमासी पौधा है। इसके पत्ते बड़े, मोटे और रसीले होते हैं। पत्तियों में दोनों तरफ कांटेदार संरचना और कांटेदार सिरा होता है।

पत्तियों की आंतरिक संरचना जेली जैसी होती है, जिसमें सुगंध और स्वाद भरपूर होता है। पत्तियाँ 25–30 सेमी लंबी और 3–5 सेमी चौड़ी होती हैं ।

एलोवीरा की खेती के लिए खेत की तैयारी :

एलोवेरा के पौधे किसी भी प्रकार की उपजाऊ, अनुपजाऊ मिट्टी में आसानी से उगाये जा सकते है। बस आपको एक बात का ध्यान रखना है की पौधा अधिक जल भराव और पाला पड़ने वाली जगह पर नही लगाना है।

सबसे पहले खेत की 2 से 3 बार अच्छे से जुताई करके उसमे प्रति हेक्टेयर 10 से 20 टन अच्छी तरह सडी हुई गोबर की खाद डाले के साथ में 120 किलोग्राम यूरिया, 150 किलोग्राम फास्फोरस 30 किलोग्राम पोटाश खेत में समान रूप से बिखेर देवे फिर एक बार हल्की जुताई करके पाटा लगा कर मिट्टी को समतल बना ले। फिर खेत में 50 × 50 सेमी. की दूरी पर उठी हुई क्यारी बना ले।

प्रवर्धन और बोने की विधि :

वर्षा ऋतू में पुराने पौधो के पास निकले सकर्स (छोटे छोटे पोधे) को खेत में बनी हुई क्यारियों में एक मीटर में दो लाइन फिर एक मीटर जगह छोड़कर इस क्रम में लगाने से एक हेक्टैर में लगभग ४०,००० पौधे लगें। पौधा को भूमि में १५ सेंटीमीटर गहरे, १.५ × १.५ फीट या २ × २ फीट पर लगाने चाहिए। प्रत्यारोपण जुलाई से अगस्त माह में करना चाहिए।

एलोवेरा की सिचाई :

यह कम पानी चाहने वाली फसल है इसलिए सालभर में इसे मात्र 4 या 5 बार सिचाई की आवश्यकता होती है। सिचाई के लिए ड्रीप या स्प्रिंकलर प्रणाली अच्छी रहती है। इससे इसकी उपज में बढ़ोत्तरी होती है। गर्मी के दिनों में 25 दिनों के अंतराल में सिचाई करनी चाहिए।

निराई–गुड़ाई :

खेत में खतपतवार की स्थिति देख कर समय–समय पर निराई गुड़ाई कर लेनी चाहिए। वर्ष भर में 3 या 4 निराई करनी चाहिये। निराई के बाद पौधो की जड़ो में मिट्टी चढ़ानी चाहिए ताकि पौधे गिरे नही।

रोग और कीट नियन्त्रण:

वैसे तो इस फसल पर कोई विशेष कीट और रोगों का प्रभाव नही होता है। लेकिन कही–कही तनों के सड़ने और पत्तो पर दब्बो वाली बीमारियाँ का असर देखा जा है, जो एक फफूंद जनक रोग होता है उसके उपचार के लिए मेंन्कोजेब 3 ग्राम प्रति लीटर के हिसाब से छिडकाव करना चाहिए।

एलोवेरा की कटाई और उत्पादन:

यह फसल एक वर्ष बाद काटने योग्य हो जाती है। कटाई के दौरान पौधो की सबसे पहले निचली ठोस 3 या 4 पत्तो की कटाई करे उसके उपरांत लगभग एक महीने के बाद उस से उपर वाली पत्तियों की कटाई करनी चाहिए। कभी भी उपर की नई नाजुक पत्तियों की कटाई नही करनी चाहियें। कटे हुए पत्तों में फिर से नई पत्तिया बननी शुरू हो जाती है। प्रति हेक्टेयर 50 से 60 टन ताजी पत्तिया प्रतिवर्ष मिल जाती है। दूसरे वर्ष में 15 से 20 प्रतिशत वृद्धि होती है। बाजार में इन पत्तियों की अनुमानित कीमत 3 से 6 रूपये किलो होती है। एक स्वस्थ पौधे की पत्तियो का वजन 3 से 5 किलो तक हो जाता है।

उत्पादन लागत एवं शुद्ध लाभ

एक एकड़ में लगभग 10 से 15,000 हजार रूपए खर्च कर प्रति वर्ष 50,000 तक की आय प्राप्त कर सकते है। कुछ सक्षम किसान है जो एक हेक्टेयर की भूमि में 1 से 2 लाख का खर्च कर प्रति वर्ष 6 से 8 लाख तक की आय प्राप्त कर चुके है।

कटाई के बाद प्रबंधन और प्रसस्करण:–

स्वस्थ पत्तियों की कटाई के बाद साफ पानी से धो कर पत्तियों के निचले हिस्से में ब्लेड या चाकू से कट लगा कर थोड़े समय के लिए छोड़ देते है। जिसमे से पीले रंग का गाडा चिपचिपा प्रदार्थ–रस (जेल) निकलता है उसे एक पात्र में इक्कठा कर के वाष्पीकरण विधि से इस रस को सुखा लिया जाता है। इस सूखे हुए रस को जातिगत और अलग अलग विधि से तेयार करने के बाद अलग अलग नामों से जाना जाता है। जैसे सकोत्रा, केप, जंजीवर, एलोज, अदनी आदि।

एलोवेराकी खेती करने के क्या फायदा है:–

» इसकी खेती किसी भी जमींन (बंजर और अनूउपयोगी) पर आसानी से की जा सकती है।

» कम खर्च और और सस्ती खेती। गरीबी किसान को फायदा।

» सिचाई और दवाई का कम खर्च।

» इसे कोई भी पशु नही खाता है इसे खेत की मेड पर चारों तरफ लगाने से दूसरी फसल की भी सुरक्षा हो जाती है

» एक बार लगाने के बाद 5 सालों तक आसानी से फसल ले सकते है।

» अन्य फसलो की तुलना में मिट्टी का हास कम होता है।